नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा
Rajdhani - 25 Jun 2024 - 25raj3
epaper.navabharat.news

बायपास में पैर की नस की बजाय छाती की आर्टरी लगाई, दी नई जिंदगी

अम्बेडकर अस्पताल के हार्ट, चेस्ट और वैस्कुलर सर्जरी विभाग में बुजुर्ग महिला के हार्ट की जटिल सर्जरी

6 माह से मरीज को छाती में दर्द एवं सांस फूलने की थी शिकायत, कोरोनरी आर्टरी में ब्लॉकेज के साथ माइट्रल और ट्राइकस्पिड वॉल्व में था लीकेज

नवभारत रिपोर्टर। रायपुर।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति चिकित्सालय स्थित एडवांस कार्डियक इंस्टिट्यूट के हार्ट, चेस्ट और वैस्कुलर सर्जरी विभाग में 63 वर्षीय महिला के हृदय की जटिल सर्जरी कर उन्हें नई जिंदगी दी गई। सर्जरी के दौरान मरीज के पैर की नस के बजाय छाती के अंदर स्थित लेफ्ट इंटरनल मेमरी

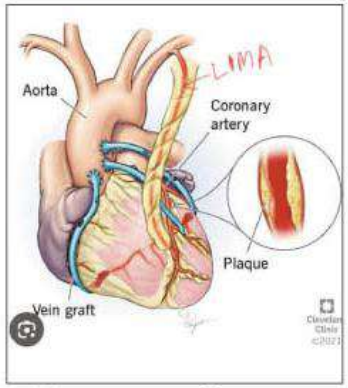

आर्टरी (लिमा) का प्रयोग किया गया। इससे मरीज की बायपास वाली नस ज्यादा समय तक चलेगी।

मध्यप्रदेश की रहने वाली महिला को 6 माह से छाती में दर्द और सांस

फूलने की शिकायत थी। मरीज के परिजन एसीआई के हार्ट सर्जरी विभाग में डॉ. कृष्णकांत साहू के पास जांच कराने के लिए लेकर आए। एंजियोग्राफी एवं इकोकार्डियोग्राफी से पता चला कि मरीज के हृदय के कोरोनरी आर्टरी में 95 प्रतिशत ब्लॉकेज है एवं माइट्रल वॉल्व एवं ट्राइकस्पिड वॉल्व में लीकेज है। जिसके कारण मरीज के हार्ट का पंपिंग पावर कम हो गया था। इसके लिए डॉ. साहू ने मरीज को कोरोनरी बाईपास सर्जरी एवं वॉल्व प्रत्यारोपण की सलाह दी। इस मरीज की दो सर्जरी होनी थी क्योंकि इनके हार्ट की नसों में जिसको कोरोनरी आर्टरी कहते हैं, में ब्लॉकेज था। दो वॉल्व में लीकेज होने के कारण हार्ट भी कमजोर था। साथ ही मरीज की उम्र भी ज्यादा थी इसलिए यह सर्जरी जटिल थी।

मरीज की पहले कोरोनरी बायपास सर्जरी

सर्वप्रथम इस मरीज का बीटिंग हार्ट कोरोनरी बायपास किया गया। जिसमें लेफ्ट इंटरनल मेमरी आर्टरी (लिमा) का उपयोग किया गया। आर्टेरियल ग्राफ्ट लगाने से मरीज को बहुत फायदा होता है। इससे ग्राफ्ट में पुनः ब्लॉकेज की संभावना कम हो जाती है और ग्राफ्ट लम्बे समय तक चलता रहता है। साथ ही मरीज के पैर में चीरा लगाने की जरूरत नहीं पड़ती। उसके बाद मरीज की ओपन हार्ट सर्जरी करके खराब माइट्रल वॉल्व को टाइटेनियम के कृत्रिम वॉल्व (सेंट जुड बाई लीफलेट मैकेनिकल वॉल्व) से बदला गया एवं ट्राइकस्पिड वॉल्व को ट्राइकस्पिड रिंग लगाकर रिपेयर किया गया।